ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

जुलाई 2018 (द्वितीय)

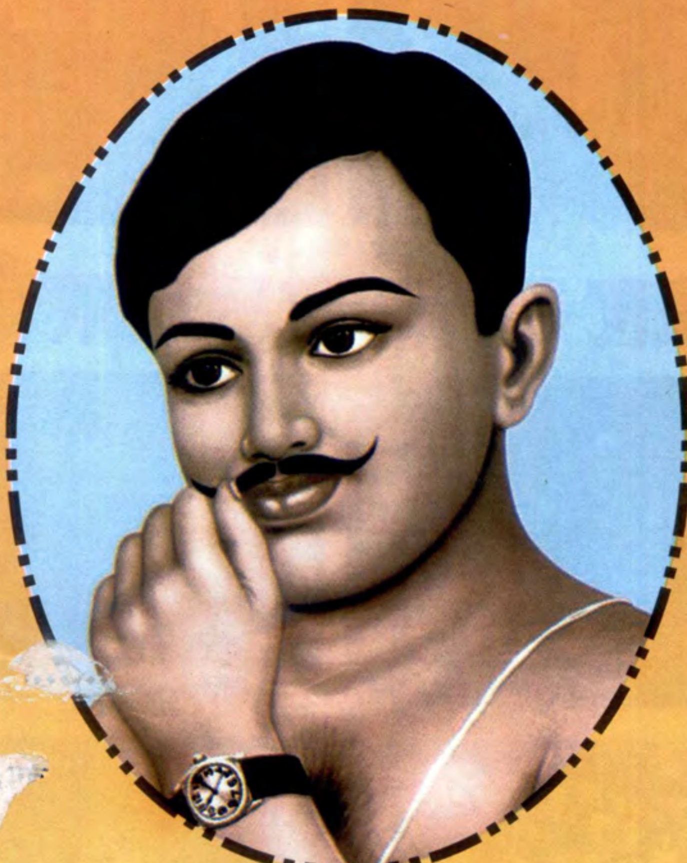

महान् क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 12

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जुलाई, 2018 (द्वितीय)
16 से 30 जुलाई, 2018 तक

इस अंक में....

1. जिज्ञासा-विमर्श (वेद+जीवात्मा) 2
2. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 4
3. अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश कब और क्यों? 6
4. महात्मा गान्धी तथा आर्यसमाज 8
5. महान् क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद 10
6. जीवन का प्रथम प्रश्न 12
7. ईश्वर की उपासना का महत्त्व 14
8. ये वहीं बैठे हैं, इन्हें आगे बढ़ाओ 15
9. प्रेरक वचन 15
9. समाचार-प्रभाग 16

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

जिज्ञासा-विमर्श (वेद+जीवात्मा)

❑ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

गतांक से आगे....

सप्तैव मर्यादाः कवयश्चक्रुस्तासामेकामप्यभिगच्छन्नं-हस्वान् भवति, स्तेयं तल्पारोहणं ब्रह्महत्यां भ्रूणहत्यां सुरापानं दुष्कृतस्य कर्मणः पुनः पुनः सेवां पातकेऽनृ-तोद्यमिति। (नि० 6.27)

अर्थात् सात मर्यादाएँ क्रान्तदर्शी ऋषियों ने सम्पूर्ण धर्म का विचार करके बनाईं, उनमें से एक का भी उल्लंघन करके मनुष्य पापवान् होता है–

1. **स्तेयम्**-चोरी, 2. **तल्पारोहणम्**-दूसरे के बिस्तर पर चढ़ना अर्थात् व्यभिचार कर्म, 3. **ब्रह्महत्याम्**-वेदपाठी धार्मिक ब्राह्मण की हत्या, 4. **भ्रूणहत्याम्**-गर्भस्थ शिशु की हत्या, 5. **सुरापानम्**-मद्यपान (नशा करना), 6. **दुष्कृतस्य कर्मणः पुनः पुनः सेवाम्**-दुष्कृत कर्म का बार-बार सेवन, 7. **पातकेऽनृतोद्यम्**-पाप करके झूठ बोलना। इन सात मर्यादाओं का संकेत वेदमन्त्र कर रहा है।

2. कान पर जनेऊ चढ़ाने की परम्परा का कोई वैदिक आधार पढ़ने-सुनने को नहीं मिला। ऐसा हो सकता है कि पहले के लोग उत्तरीय (ऊपर का वस्त्र) कम पहनते थे और जनेऊ कटि से नीचे रहा होगा। वस्त्र ऊपर न होने से लघुशंका आदि करते समय जनेऊ भूमि पर नीचे टिक जाता होगा। वह नीचे न टिके इसके लिए सुविधा की दृष्टि से कान पर चढ़ाना किया होगा। बाद में इसकी परम्परा ही चल पड़ी, जबकि आज उसकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आजकल ऊपर पूरे वस्त्र धारण किये जाते हैं, जिससे जनेऊ नीचे टिकता ही नहीं है। जब नीचे टिकता ही नहीं है तो ऊपर कान पर चढ़ाने की क्या आवश्यकता है? हाँ, जिस किसी का जनेऊ नीचे टिकता है, वह उसको ऊपर कर सकता है।

जिज्ञासा-10. आचार्य जी! मैं तीन साल से अन्य द्वारा पूछे गए जिज्ञासा-समाधान पढ़-पढ़कर उपकृत होता आया हूँ, लेकिन आज मेरे मन में भी एक जिज्ञासा है, समाधान चाहता हूँ।

यजुर्वेद के बारे में जानना था। प्रायः यजुर्वेद के बारे में शुक्ल और कृष्ण शब्दों का व्यवहार होता है, किन्तु मेरे पास जो वेद हैं, उसमें सिर्फ 'यजुर्वेद' लिखा हुआ है। कृष्ण-शुक्ल कुछ भी नहीं लिखा है। कोई पौराणिक पण्डित संकल्प पढ़ते समय 'शुक्ल यजुर्वेदाध्यायी' ऐसा भी पढ़ लेते हैं। शुक्ल और कृष्ण के बारे में स्पष्टीकरण देने की कृपा करें।

–रुद्र शास्त्री, गाँव-गोलमागाँव, पो.जि. उदालगुरी, आसाम

समाधान-चारों वेदों में से यजुर्वेद दो प्रकार का मिलता है-शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद। इसके इन दोनों नामों का कारण है कि शुक्ल यजुर्वेद में केवल मन्त्र भाग हैं, अर्थात् इसमें मूल मन्त्र होने से शुक्ल (शुद्ध) वेद कहलाता है। कृष्ण यजुर्वेद विनियोग, मन्त्र व्याख्या आदि से मिश्रित होने के कारण मूल न होकर मिश्रित वा कृष्ण यजुर्वेद कहलाता है। मुख्य रूप से यही कारण शुक्ल और कृष्ण कहने का है।

शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ वर्तमान में मिलती हैं-वाजसनेयि माध्यन्दिन संहिता और काण्व संहिता। दोनों में चालीस अध्याय हैं, काण्व संहिता का चालीसवां अध्याय ईशोपनिषद् के रूप में प्रख्यात है। कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ मिलती हैं-तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक और कठ कपिष्ठल शाखा।

महर्षि दयानन्द के अनुसार मूल वेद शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा है। इसी का महर्षि ने भाष्य किया है।

आपके प्रश्न का उत्तर तो इतने से ही है। इस विषय में पौराणिकों ने इन दोनों शुक्ल, कृष्ण को सिद्ध करने के लिए अपनी कथाएँ कल्पित कर रखी हैं। इन कल्पित कथाओं को छोड़ शुक्ल-कृष्ण का यथार्थ कारण उपरोक्त ही है।

अब यजुर्वेद के विषय में कुछ और लिखते हैं। वेदों की कुल शाखाएँ 1127 होने का प्रमाण पातञ्जल महाभाष्य में मिलता है। वहाँ लिखा है-एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्, एकशतम् अध्वर्युशाखाः, सहस्त्रवर्त्मा सामवेदः, नवधाऽऽथर्वणो वेदः, अर्थात् इक्कीस शाखा ऋग्वेद की, एक सौ एक शाखा यजुर्वेद की, एक हजार शाखा सामवेद की और नौ शाखा अथर्ववेद की।

यजुर्वेद की एक सौ एक शाखाओं में से छः शाखाएँ

उपलब्ध होती हैं, यह ऊपर कह दिया है। शुक्ल यजुर्वेद का ब्राह्मण शतपथ ब्राह्मण है, जिसके रचयिता महर्षि याज्ञवल्क्य हैं। कृष्ण यजुर्वेद का ब्राह्मण तैत्तिरीय ब्राह्मण है, जिसकी रचना तित्तिरि आचार्य ने की है। शुक्ल यजुर्वेद का श्रौतसूत्र कात्यायन कृत है जो कात्यायन श्रौतसूत्र कहलाता है। कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित आठ श्रौतसूत्र हैं-1. बौधायन, 2. आपस्तम्ब, 3. सत्यषाढ़ या हिरण्यकेशी, 4. वैखासन, 5, भारद्वाज, 6. वाधूल, 7. वाराह, 8. मानव श्रौतसूत्र।

महर्षि दयानन्द यजुर्वेद के प्रतिपाद्य विषय के सम्बन्ध में अपने भाष्य के प्रारम्भिक प्रकरण में लिखते हैं कि ''ईश्वर ने जीवों को गुण-गुणी के विज्ञान के उपदेश के लिए ऋग्वेद में सब पदार्थों की व्याख्या करके यजुर्वेद में यह उपदेश किया कि उन पदार्थों से यथायोग्य उपकार ग्रहण करने के लिए कर्म किस प्रकार करने चाहिएं। इसके लिए जो-जो अंग और जो-जो साधन उपेक्षित हैं, उन सब का प्रकाश यजुर्वेद में किया गया है। जब तक ज्ञान क्रियानिष्ठ नहीं होता, तब तक उससे श्रेष्ठ सुख कभी नहीं हो सकता। विज्ञान क्रिया में निमित्त बनता है, प्रकाश कारक होता है, अविद्या की निवृत्ति करता है, धर्म में प्रवृत्ति करता है और धर्म तथा पुरुषार्थ का मेल कराता है। जो-जो कर्म विज्ञाननिमित्तक होता है, वह-वह सुखजनक हो जाता है, अत: मनुष्यों को चाहिए कि विज्ञान पूर्वक ही नित्य कर्मानुष्ठान करें। जीव चेतन होने से बिना कर्म मिये नहीं रह सकता। कोई भी मनुष्य आत्मा मन, प्राण और इन्द्रियों के संचालन के बिना क्षणभर भी नहीं रह सकता। **'यजुर्भि: यजन्ति'** इस प्रमाण से यजुर्वेद के मन्त्रों से यजन किया जाता है। जिससे मनुष्य ईश्वर का और धार्मिक विद्वानों का पूजा-सत्कार करते हैं, पदार्थों के संगतिकरण द्वारा शिल्पविद्या की सिद्धि किया करते हैं, शुभ विद्या और शुभ गुणों का दान किया करते हैं, यथायोग्य सबके उपकार में शुभ व्यवहार में और विद्वानों में धनादि का व्यय करते हैं, वह यजु: है। इस प्रकार यजुर्वेद में मुख्य रूप से कर्मकाण्ड का विषय है। महर्षि ने इसी बात को सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में भी कहा है।''

जीवात्मा

जिज्ञासा-1. 'जीव शरीर में विभिन्न विभु है, वा परिछिन्न? **उत्तर**-परिच्छिन्न, जो विभु होता तो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, जाना, आना कभी नहीं हो सकता।'' (सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास) यहाँ जाना-आना आदि किसका है? जीव का या शरीर का?

-ज्ञानप्रकाश कुकरेजा, 736/8, अर्बन स्टेट, करनाल, हरयाणा-132001

समाधान-यहाँ महर्षि दयानन्द ईश्वर और जीव की तुलना करते हुए जीव के स्वरूप को दर्शा रहे हैं कि जीव शरीर में विभु न होकर परिच्छिन्न है। ऐसा कहकर आगे इसके कारण लिखे हैं। कारणों पर चर्चा करने से पहले विभु व परिच्छिन्न शब्दों के अर्थों को देख लेते हैं। विभु कहते हैं सर्वव्यापक, सर्वगत, सर्वोपरि को। ये अर्थ (गुण) जीव में कभी नहीं घट सकते। परिच्छिन्न के अर्थ हैं सीमित, परिसीमित, सीमाबद्ध, एकदेशीय। यही अर्थ जीव में घटते हैं। महर्षि जीव के विभु न होकर परिच्छिन्न होने के कारण कह रहे हैं, ''जो विभु होता तो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण, जन्म, संयोग, वियोग, जाना, आना कभी नहीं हो सकता।'' स्वप्न, जाग्रत, सुषुप्ति शरीर धारियों में होती है। विभु परमेश्वर कभी शरीर धारण नहीं करता, इसलिए ये अवस्थाएँ भी विभु परमेश्वर में नहीं होती। शरीर नहीं तो जन्म-मरण किसका? विभु (व्यापक) में संयोग-वियोग, जाना-आना भी नहीं हो सकता, क्योंकि संयोग अप्राप्त से होता है और परमेश्वर व्यापक होने से उसको कुछ अप्राप्त है ही नहीं। वियोग प्राप्त से होता है, यहाँ भी परमेश्वर सर्वव्यापक होने से किसी पदार्थ से हट नहीं सकता, तो उसका वियोग भी नहीं हो सकता। वैसे ही जाना-आना भी सर्वव्यापक का नहीं हो सकता, यह तो एकदेशीय में ही संभव है। महर्षि ने जीव को परिच्छिन्न कहा और परिच्छिन्न होने में जो हेतु दिए हैं, वे सब जीव में ही घटते हैं। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति शरीर में रहते हुए जीव की अवस्थाएँ हैं। जन्म-मरण, शरीर का मिलना और शरीर का छूटना एकदेशीय परिच्छिन्न जीव के लिए है। शरीर से संयोग और उससे वियोग जीवात्मा का होता है अथवा शरीर के माध्यम से आत्मा किसी अन्य से संयुक्त होता है और वियुक्त होता है। इसी प्रकार संसार में आत्मा शरीर में रहते हुए जाना-आना करता है और मोक्ष में परमेश्वर के आधार से जाना-आना परिच्छिन्न जीव करता है अर्थात् यह जाना-आना आदि शरीर के माध्यम से जीव करता है। क्रमश: अगले अंक में...

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

एकादश समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

जैनियों ने पण्डितों को दूर-दूर से बुलाकर सभा कराई। उसमें शंकराचार्य का पक्ष वेदमत का स्थापन और जैनियों का खण्डन था और जैनियों के पक्ष अपने मत का स्थापन और वेद का खण्डन था। शास्त्रार्थ कई दिनों तक हुआ।

जैनियों का मत यह था कि "सृष्टि का कर्त्ता अनादि ईश्वर कोई नहीं, यह जगत् और जीव अनादि हैं, इन दोनों की उत्पत्ति और नाश कभी नहीं होता। इससे विरुद्ध शंकराचार्य का मत था कि अनादि सिद्ध परमात्मा ही जगत् का कर्त्ता है, यह जगत् और जीव झूठा है, क्योंकि उसी परमेश्वर ने अपनी माया से जगत् बनाया, वही धारण और प्रलयकर्त्ता है और यह जीव और प्रपंच स्वप्नवत् है, परमेश्वरआप ही सब रूप होकर लीला कर रहा है।"

बहुत दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा, परन्तु अन्त में युक्ति और प्रमाण से जैनियों का मत खण्डित और शंकराचार्य का मत अखण्डित रहा। तब उन जैनियों के पण्डित और सुधन्वा राजा ने वेदमत का स्वीकार कर लिया, जैनमत को छोड़ दिया। सुधन्वा राजा ने अपने इष्ट-मित्र राजाओं को लिखकर शंकराचार्य से जैनियों का शास्त्रार्थ कराया। परन्तु जैन का पराजय-समय होने से वे पराजित होते गए। पश्चात् शंकराचार्य का आर्यावर्त देश में सर्वत्र घूमने का प्रबन्ध सुधन्वादि राजादि ने कर दिया और उनकी रक्षा के लिए साथ में नौकर-चाकर भी रख दिये। उसी समय में सबके यज्ञोपवीत होने लगे और वेदों का पठन-पाठन भी चला। दश वर्ष के भीतर आर्यावर्त देश में सर्वत्र घूमकर जैनियों का खण्डन और वेदों का मण्डन किया।

प्रश्न 777. शंकराचार्य के साथ कैसा षड्यन्त्र हुआ?

उत्तर-शंकराचार्य के पूर्व शैवमत भी थोड़ा-सा प्रचलित था, शंकराचार्य ने उसका भी खण्डन किया, वाममार्ग का भी खण्डन किया। उस समय इस देश में बहुत धन था और स्वदेश भक्ति भी थी। जैनियों के मन्दिर शंकराचार्य और सुधन्वा राजा ने नहीं तुड़वाये थे, क्योंकि उनकी उनमें वेदादि की पाठशाला करने की इच्छा थी।

जब वेदमत का स्थापन हो चुका और विद्या-प्रचार करने का विचार करते ही थे, उतने में दो जैन ऊपर से कथनमात्र वेदमत और भीतर से कट्टर जैन अर्थात् कपटमुनि थे, शंकराचार्य उन पर अति प्रसन्न थे, उन दोनों ने अवसर पाकर शंकराचार्य को ऐसी विषयुक्त वस्तु खिलाई कि उनकी क्षुधा मन्द हो गई। पश्चात् शरीर में फोड़े-फुंसी होकर छह महीने के भीतर शरीर छूट गया। तब सब निरुत्साही हो गये और जो विद्या का प्रचार होने वाला था वह भी न होने पाया।

प्रश्न 778. शंकराचार्य के शिष्यों ने किस प्रकार की विचारधारा को जन्म दिया?

उत्तर-शंकराचार्य जी ने जो शारीरिक भाष्य आदि बनाये, उनके शिष्य उनका प्रचार करने लगे और जैनियों का खण्डन के लिए 'ब्रह्म सत्य, जगत् मिथ्या और जीव ब्रह्म की एकता' का उपदेश करने लगे। यदि यह मत शंकराचार्य का निज मत था तो वह ठीक नहीं था, जो जैनियों के खण्डन के लिए उस मत को स्वीकार किया हो तो कुछ अच्छा है।

प्रश्न 779. शैव मत वाले किस चीज को महत्त्व देते थे?

उत्तर-शैव मानने लगे कि जिसके कपाल में भस्म और कण्ठ में रुद्राक्ष नहीं है, उसको धिक्कार है। उसका चाण्डाल के तुल्य त्याग करना चाहिए।

प्रश्न 780. शैवमत वाले किसको साक्षात् महादेव के सदृश मानते हैं?

उत्तर-जो कण्ठ में 32, शिर में 40, छह कानों में, बारह करों में, सोलह भुजाओं में, एक शिखा और हृदय में 108 रुद्राक्ष धारण करता है वह साक्षात् महादेव के सदृश है।

प्रश्न 781. पश्चात् इन वाममार्गियों और शैवों ने सम्मति करके क्या किया?

उत्तर-इन दोनों ने सम्मति करके भगलिंग का स्थापन किया, जिसको जलाधारी और लिंग कहते हैं, उसकी पूजा करने लगे। उन्हीं पाषाणादि मूर्तियों और भगलिंग की पूजा में सारे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि सिद्धियां मानने लगे।

प्रश्न 782. पोपों ने जैनियों के विरुद्ध किस आचरण को मानने का विधान किया?

उत्तर-चाहे कितना ही दु:ख प्राप्त हो और प्राण कण्ठगत अर्थात् मृत्यु का समय भी क्यों न आया हो, तो भी यावनी अर्थात् म्लेच्छ भाषा मुंख से न बोलनी और उन्मत्त हस्ती मारने को क्यों न दौड़ा आता हो और जैन के मन्दिर में जाने से प्राण बचता हो, तो भी जैन मन्दिर में प्रवेश न करे। किन्तु जैन मन्दिर में प्रवेश कर बचने से हाथी के सामने जाकर मर जाना अच्छा है।

ऐसे-ऐसे अपने चेलों को उपदेश करने लगे। जब उनसे कोई प्रमाण पूछता था कि तुम्हारे मत में किसी माननीय ग्रन्थ का भी प्रमाण है? तो कहते थे कि हां है। जब वे पूछते थे कि दिखलाओ? तब मार्कण्डेय पुराणादि के वचन पढ़ते और सुनाते थे जैसा कि दुर्गापाठ में देवी का वर्णन लिखा है।

प्रश्न 783. राजा भोज के राज्य में कैसे-कैसे शिल्पी थे?

उत्तर-राजा भोज के राज्य में और समीप ऐसे-ऐसे शिल्पी लोग थे कि जिन्होंने घोड़े के आकार का एक यान यन्त्रकलायुक्त बनाया था कि जो एक कच्ची घड़ी में ग्यारह कोश और एक घण्टे में साढ़े सत्ताईस कोश जाता था। वह भूमि और अन्तरिक्ष में भी चलता था। और दूसरा पंखा ऐसा बनाया था कि बिना मनुष्य के चलाये कलायन्त्र के बल से नित्य चला करता और पुष्कल वायु देता था। जो ये दोनों पदार्थ आज तक बने रहते तो यूरोपियन इतने अभिमान में न चढ़ जाते।

प्रश्न 784. पोपों ने अपने चेलों को जैनियों के मन्दिरों में जाने से रोकने के लिए क्या योजना बनाई?

उत्तर-जब पोप जी अपने चेलों को जैनियों से रोकने लगे तो भी वे मन्दिरों में जाने से रुक न सके और जैनियों की कथा में भी लोग जाने लगे। जैनियों के पोप इन पुराणियों के पोपों के चेलों को बहकाने लगे। तब पुराणियों ने विचारा कि इसका कोई उपाय करना चाहिए नहीं तो अपने चेले जैनी हो जायेंगे। पश्चात् पोपों ने यही सम्मति की कि जैनियों के सदृश अपने भी अवतार, मन्दिर, मूर्ति और कथा के पुस्तक बनावें। इन लोगों ने जैनियों के चौबीस तीर्थंकरों के सदृश चौबीस अवतार, मन्दिर और मूर्तियां बनाई और जैसे जैनियों के आदि पुराण और उत्तरपुराणादि हैं, वैसे अठारह पुराण बनाने लगे।

प्रश्न 785. वैष्णव मत का प्रारम्भ कब हुआ?

उत्तर-राजा भोज के डेढ़ सौ वर्ष के पश्चात् वैष्णव मत का आरम्भ हुआ। एक शठकोप नामक व्यक्ति कंजर जाति में उत्पन्न हुआ था, उससे थोड़ा-सा चला। उसके पश्चात् मुनिवाहन भंगी कुलोत्पन्न और तीसरा यावनाचार्य यवनकुलोत्पन्न आचार्य हुआ। तत्पश्चात् ब्राह्मण कुलज चौथा रामानुज हुआ, उसने अपना मत फैलाया।

प्रश्न 786. शैवों, शाक्तों, वैष्णवों ने कैसे ग्रन्थ बनाये?

उत्तर-शैवों ने शिवपुराणादि, शाक्तों ने देवीभागवतादि, वैष्णवों ने विष्णुपुराणादि ग्रन्थ बनाये। उनमें अपना नाम इसलिए नहीं धरा कि हमारे नाम से बनेंगे, तो कोई प्रमाण न करेगा। इसलिए व्यास आदि ऋषि-मुनियों के नाम धरके पुराण बनाये।

प्रश्न 787. 'देवी भागवत' पुराण में जगत् को बनाने का कैसा वर्णन है?

उत्तर-देवी भागवत में लिखा है कि 'श्री' नामा एक देवी जो श्रीपुर की स्वामिनी लिखी है, उसी ने सब जगत् को बनाया और ब्रह्मा, विष्णु, महादेव को भी उसी ने रचा। जब उस देवी की सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा हुई तब उसने अपना हाथ घिसा, उससे हाथ में एक छाला हुआ, उसमें से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। उससे देवी ने कहा कि तू मुझसे विवाह कर। ब्रह्मा ने कहा कि तू मेरी माता लगती है, मैं तुझसे विवाह नहीं कर सकता। ऐसा सुनकर माता को क्रोध चढ़ा और लड़के को भस्म कर दिया। और फिर हाथ घिस के उसी प्रकार दूसरा लड़का उत्पन्न किया। उसका नाम विष्णु रखा। उससे भी उसी प्रकार कहा। उसने न माना तो उस को भी भस्म कर दिया। पुनः उसी प्रकार तीसरे लड़के को उत्पन्न किया। उसका नाम महादेव रखा और उससे कहा कि तू मुझसे विवाह कर।

क्रमशः अगले अंक में......

अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश कब और क्यों?

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

इस वैज्ञानिक युग से युवा वर्ग क्या चाहता है। महाभारत काल के बाद ऋत सत्य के वैचारिक क्रान्ति का सूर्य 'सत्यार्थप्रकाश' महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित श्रावणी पक्ष वेदप्रचार सप्ताह में सत्यार्थप्रकाश घर-घर पहुंचाना है। ऋतस्य पथि वेधा अपायि-ऋ0-सत्य के पथ की रक्षा ईश्वर करता है।

ऋषि दयानन्द का जन्म 1824 ई0 में हुआ था। वे 1860 में गुरु विरजानन्द जी के पास विद्याध्ययन के लिये पहुंचे। उस समय उनकी आयु 36 वर्ष की थी। 1863 में उन्होने गुरु से दीक्षा ली और अध्ययन समाप्त करके जीवन क्षेत्र में उतर पड़े। इस समय वे 39-40 वर्ष के हो चुके थे। विरजानन्द के पास उन्होंने जो सीखा, वही उनकी वास्तविक शिक्षा थी, क्योंकि इससे पहले जो कुछ पढ़ आये थे, उसे विरजानन्द जी ने भुला देने की उनसे प्रतिज्ञा ली थी। इस प्रकार ऋषि दयानन्द जी की यथार्थ शिक्षा 1860 से 1863 तक कुल तीन वर्ष की थी। उन्होंने पीछे चलकर अपने जीवन काल में जितने व्याख्यान दिये, जितने ग्रन्थ लिखे, जितने शास्त्रार्थ किये वह इन तीन साल के अध्ययन का परिणाम था। इसी से स्पष्ट होता है कि इन तीन सालों में उन्होंने जो पाया था वह कितना मूल्यवान था।

तीन वर्षों का चमत्कार—अपने गुरु विरजानन्द जी से ऋषि दयानन्द जी ने जो गुर पाया था वह आर्ष तथा अनार्ष ग्रन्थों में भेद करना था। 36 वर्ष की आयु से पहले उन्होंने जो कुछ पढ़ा था वह अनार्ष ग्रन्थों का अध्ययन था। आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन का उनका कुल समय तीन वर्षों का था। इन तीन वर्षों के अध्ययन ने उनके जीवन उनकी विचारधारा में जो क्रान्ति उत्पन्न कर दी उससे भारत के पिछले सौ वर्षों का इतिहास बन गया।

धार्मिक सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना का मूल स्रोत सत्यार्थप्रकाश—अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश 1874 में लिखा गया। मुरादाबाद के राज जयकृष्णदास जब काशी मे डिप्टी कलेक्टर थे तब ऋषि दयानन्द काशी पधारे थे। राजा जयकृष्णदास ने ऋषि से कहा आपके उपदेशामृत से वे ही व्यक्ति लाभ उठा सकते हैं जो आपके व्याख्यान सुनते हैं। जिन्हें आपके व्याख्यान सुनने का अवसर नहीं मिलता उनके लिये अगर आप अपने विचारों को ग्रन्थ रूप में लिख दे तो जनता का बडा उपकार हो। ग्रन्थ के छपने का भार राजा जयकृष्ण ने अपने ऊपर ले लिया। यह आश्चर्य की बात है कि यह बृहत्काय तथा महत्वपूर्ण ग्रन्थ जिसे पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी ने 14 बार पढ़कर कहा कि हर बार में उन्हें नया रत्न हाथ आता है, कुल साढ़े तीन महीनों में लिखा गया।

जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का गहराई से अध्ययन किया उन्होंने पाया कि इसमें 377 ग्रन्थों का हवाला है। इस ग्रन्थ में 1542 वेदमंत्रों या श्लोकों का उदाहरण दिया गया है। चारों वेद, सब पुराण, ग्रन्थ, सब उपनिषद्, छओ दर्शन, अठारह-स्मृति, सूच पुराण, सूर्य ग्रन्थ, जैन-बौद्धग्रन्थ, बाइबिल, कुरान-सबका उदाहरण ही नहीं उनका रेफरेन्स भी दिया है। किस ग्रन्थ में कौन-सा मंत्र या श्लोक या वाक्य कहां है, उनकी संख्या क्या है-यह सब कुछ इस साढ़े तीन महीनों में लिखे ग्रन्थ में मिलता है जिसने नवीन सामाजिक दृष्टिकोण को जन्म दिया।

सत्यार्थप्रकाश चुने हुए क्रान्तिकारी विचारों का खजाना है—ऐसे विचार जिन्हें उस युग में कोई सोच भी नहीं सकता था। समाज की रचना जन्म के आधार पर न होकर कर्म के आधार पर होनी चाहिए। यह एक विचार इतना क्रान्तिकारी है कि इसकी क्रिया से हमारी 90 प्रतिशत समस्यायें हल हो जाती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का विचार सत्यार्थ प्रकाश की ही देन है लोकमान्य तिलक ने कहा था स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। दादाभाई नोरोजी ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था। किन्तु इनसे पहले ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के 8वें सम्मुलास में लिखा था कोई कितना कहे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता हैं।

वर्तमान में हम जिन समस्याओं को लेकर उलझे रहते हैं उन सबका निदान सत्यार्थ प्रकाश में मिलता है। जैसे हरिजनों की समस्या, स्त्रियों की समस्या, गरीबी की समस्या, देशभाषा की समस्या, चुनाव की समस्या, नियम तथा व्यवस्था की समस्या, गोरक्षा की समस्या, नसबन्दी की समस्या, आचार की

समस्या, नवयुवकों की समस्या, इन सब समस्याओं का हल सत्यार्थ प्रकाश में पहले से ही है।

वेदों की समस्या-हिन्दू समाज की सबसे बड़ी समस्या वेदों की थी। हर कोई वेदों का नाम लेकर कहता था, स्त्रियों और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है, क्योंकि वेदो में लिखा है- **'स्त्रीशूद्रो नाधीयाताम्'**। बाल विवाह क्यों होना चाहिए क्योंकि वेदों में लिखा है। जन्म से वर्ण व्यवस्था क्यों माने, क्योंकि वेदों में लिखा है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ब्राह्मण परमात्मा के मुख से और शूद्र उसके पांव से उत्पन्न हुए हैं। जब ऋषि दयानन्द जी ने यह देखा कि वेदों का नाम लेकर हर संस्कृत वाक्य को वेद कहा जा रहा है और वेदों का उदाहरण देकर वेदमंत्रों का अनर्थ किया जा रहा है, तब उन्होंने निश्चय किया कि वेदों को केन्द्र बनाकर हिन्दू समाज की रक्षा की जा सकती है। ऋषि दयानन्द जी ने वेदों से वेदों पर प्रहार किया।

वेदों के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द की दूसरी खोज यह थी कि वेदों के शब्द रूढ़ि नहीं यौगिक हैं। वेदों के उस समय के सभी विद्वानों, भाष्यकारों ने वैदिक शब्दों के रूढि अर्थ ही किये थे। सायण, उव्वट, महीधर, मैक्समूलर, रांथ, विल्सन, ग्रासमैन ने एक दूसरे को देखादेखी अर्थ किये थे। किन्तु ऋषि दयानन्द जी ने इस विचारधारा को भी ठोकर मार दी और वेदों के यौगिक अर्थ करके वेदों के प्रति संसार को नया मार्ग दिखाया। ऋषि दयानन्द जी ने हिन्दुओं को हिन्दू रहते हुए उन्हें नवीन विचारधाराओं में रंग दिया। कोई वृक्ष जड़ के बिना खड़ा नहीं रह सकता। कोई समाज अपने मूल के बिना नहीं जी सकता। ऋषि दयानन्द जी ने इसी गुर को पकड़ा था। उन्होंने कहा पीछे वेदों की तरफ देखो, उसमें जमकर आगे भविष्य की तरफ पग बढ़ाओ। भूत को छोड़ देंगे तो वृक्ष की जड कट जायेगी, भविष्य को नही देखेंगे तो उठ नहीं सकोगे यह ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश का संदेश है, यही ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य का संदेश है। (नोट-कुछ अंश वैदिक संस्कृति का संदेश से लिये गये है)।

सत्यार्थ-प्रकाश का मुख्य उद्देश्य आर्यसमाज का विकास है एक चिन्तन योजना।

भारत की वर्तमान जनसंख्या के हिसाब से आर्यसमाज का विकास संतोष जनक नहीं है, यह एक महत्त्वपूर्ण चिन्ता का विषय है। अगर हम चुप बैठे रहे तो आने वाले समय में अधिकांश आर्यसमाजो में ताले लग सकते हैं, हमें जागना ही पडेगा।

आज का युवा वर्ग इस वैज्ञानिक युग मे क्या चाहता है ? आज के अधिकांश युवा वर्ग समाज मे प्रचलित धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक मान्यताओं से ऊब चुके हैं, कुछ नया चाहते हैं और उनके लिये नया केवल वैदिक विचारधारा ही है, क्योंकि वैदिक धर्म विज्ञान व सृष्टि क्रमानुसार है।

आज आर्यसमाज को युग के साथ चलकर वैदिक मान्यताओं का प्रचार प्रत्येक रूप से करना होगा। जैसे-

1. सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारह सम्मुलासों को अलग-अलग छपाकर छोटे-ट्रेक्ट के रूप में वितरण किया जाये, छोटे ट्रेक्ट लोग जल्दी पढते हैं।
2. भारत सरकार से मांग करें कि भारत की शिक्षापद्धति में एक विषय वेदों के आर्ष मान्यताओं का पाठ का अनिवार्य किया जाए।
3. यज्ञपद्धति पंचमहायज्ञ की लाखों प्रतियां छपाकर निःशुल्क बांटी जाए।
4. आर्यसमाज की प्रमुख मान्यताएं या सोलह संस्कारो का टेक्ट छापे जायें। शराब पीने व घूमपान से हानियों का लघु पुस्तिका वितरण की जाये।
5. आर्यसमाज का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान तथा धर्म की वास्तविक परिभाषा क्या हैं, छोटी-छोटी पुस्तकें छपवाकर आन्दोलन के रूप मे वितरित की जायें।
7. आर्यसमाज ने समाज-सुधार, महिलाओं का सुधार, अन्धविश्वास समाप्त करने व सामाजिक अनेक कुरीतियों को समाप्त करने का कार्य किया।
8. आर्ष और अनार्ष विद्या में आर्ष साहित्य या ज्ञान को छोटे-छोटे पुस्तिका रूप में छापकर वितरण करना चाहिए।

नोट-उक्त छोटे-छोटे ट्रेक्टों को छापवाकर लाखों की संख्या में निःशुल्क सार्वजनिक वितरण किये जायें तो लोग चाहे थोड़ा ही पढें पर जिज्ञासा से पढ़ेंगे। प्रत्येक ट्रेक्ट के ऊपर लिखा जाए (हिन्दूधर्म का रक्षक) आर्यसमाज है। वेदों की ओर लौटो।

संम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

महात्मा गान्धी तथा आर्यसमाज

❑ आनन्ददेव शास्त्री (पूर्व प्रवक्ता संस्कृत) दिल्ली सरकार

एक दिन एक आर्यसमाज का मासिक सत्संग चल रहा था। श्री जगवीरसिंह हुड्डा भजनोपदेशक ने अपने प्रवचन में महात्मा गान्धी पर कुछ विपरीत टिप्पणी कर दी। सत्संग के अन्त में प्रधान जी जो कि कांग्रेसी हैं, ने अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री जगवीरसिंह ही नहीं, सभी आर्यसमाजियों को गान्धी पर विपरीत टिप्पणी के लिए भला-बुरा कहा। मैं ऐसे अन्ध-गान्धीभक्तों की जानकारी हेतु गान्धी जी का वास्तविक परिचय तथा गान्धी जी ने आर्यसमाज को कितनी क्षति पहुँचाई है, इस विषय पर कुछ जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैं यह लेख पुस्तकों के प्रमाणों के आधार पर ही लिख रहा हूँ।

गान्धी जी का जन्म 2 अक्तूबर 1869 ई० में गुजरात के पोरबन्दर स्थान पर एक वैश्य परिवार में हुआ था। गान्धी गुजरात में पंसारी को कहते हैं। अत: यह उनकी पारिवारिक पहचान है। गुजरात में पुत्र के नाम के साथ पिता का नाम भी लिखा जाता है। इस प्रकार गान्धी जी का नाम मोहनदास तथा पिता का नाम कर्मचन्द, इस प्रकार पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गान्धी बना। पोरबन्दर का दूसरा नाम सुदामा नगरी भी है। बचपन में गान्धी जी को मोनिया कहकर पुकारा जाता था। उनका विवाह 13 वर्ष की आयु में कस्तूरबा से हुआ। गान्धी जी ने सन् 1887 ई० में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इसके बाद गान्धी जी वैरिस्टरी पास करने के लिए 4.9.1888 ई० को बम्बई से लंदन रवाना हुए। गान्धी जी 1890 में लन्दन से पेरिस भी गये।

गान्धी जी के सहयोगियों ने उन्हें सलाह दी कि वे बम्बई जाकर हाईकोर्ट में वकालत की प्रैक्टिस करें। गान्धी जी बम्बई चले गए तथा उनके बड़े भाई के प्रयत्न से उन्हें मम्मीबाई का मुकदमा भी मिल गया। किन्तु गान्धी जी तब तक बड़े झेपू स्वभाव के थे अत: जब वे कोर्ट में जिरह के लिए खड़े हुए तो गान्धी जी जज के सामने थर-थर कांपने लगे तथा शर्मिन्दा होकर बाहर चले आये और उन्हें बम्बई छोड़नी पड़ी। (गांन्धी जी की आत्मकथा पृ० 125)

ऐसी विकट स्थिति में गान्धी जी के बड़े भाई के पास सेठ अब्दुल करीम जवेरी का संदेश आया कि दक्षिण अफ्रीका में उनकी फर्म का एक बड़ा मुकदमा चल रहा है तथा उनकी तरफ से बड़े-बड़े अंग्रेज वैरिस्टर पैरवी कर रहे हैं, परन्तु सेठ को एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो सेठ की बातें उन अंग्रेज वैरिस्टरों को समझा सके। यदि मोहनदास वहां जाने के लिए तैयार हो तो उसका प्रथम श्रेणी किराया तथा 105 पौंड तथा खाने-पीने का खर्च भी उन्हें दिया जाएगा। यह काम वकालत से आसान था, अत: गान्धी जी 2.10.1892 ई० को दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हुए। (गान्धी बेनकाब, पृ० 38, लेखक हंसराज रहबर)

गान्धी जी दक्षिण अफ्रीका के नेटाल शहर में पहुँचे। यहाँ के मूल निवासी हब्शी थे, किन्तु इंग्लैण्ड के गोरों ने यहाँ आकर उन्हें गुलाम बना लिया। किन्तु ये हब्शी नियमित मजदूरी नहीं कर सकते थे, अत: अंग्रेजों को पूर्णकालिक मजदूरों की आवश्यकता थी। वहां के गोरों ने भारत की अंग्रेज सरकार से भारत से मजदूर भेजने के लिए लिखा। भारत सरकार ने उनकी मांग स्वीकार करते हुए भारतीय मजदूरों का पहला जत्था 16.11.1860 ई० को नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) भेज दिया। स्मरण रहे मजदूर पांच वर्ष के एग्रीमेंट पर अफ्रीका भेजे जाते थे, वहाँ उन्हें गिरमिटिये कहते थे। वहाँ इनसे बहुत कठिन काम लिया जाता था तथा इन पर बड़ा अत्याचार होते थे। 1883 में इन गिरमिटिये मजदूरों के बच्चे होने पर भी टैक्स लगा दिया गया। अत: इन हिन्दोस्तानी मजदूरों में बहुत असंतोष फैल गया। वहाँ भारतीयों को हीनदृष्टि से देखा जाता था। भारतीय वकीलों को भी कुली वकील कहा जाता था। उन्हें अपमानित किया जाता था। सेठ अब्दुल्ला का मुकदमा टांसवाल में चल रहा था, वहाँ जाने के लिए गान्धी जी ने रेलवे का प्रथम श्रेणी का टिकट लिया। रात के समय जब गान्धी जी ट्रेन में बैठे थे, तब एक गोरे ने आकर, यह कहकर गान्धी जी को धक्का देकर रेल से उतार दिया कि तुम हिन्दुस्तानी प्रथम श्रेणी के डिब्बे में नहीं बैठ सकते। तब गान्धी जी वेटिंग रूम में बैठे सारी रात ठिठुरते रहे।

इसी प्रकार एक बार गान्धी जी तांगे में बैठे थे, तब भी एक गोरे ने गान्धी जी को धक्का देकर तांगे से नीचे उतार

दिया। (गांन्धी जी की आत्मकथा पृ० 148) इसी प्रकार तीसरी बार गोरों ने भारतीय होने के कारण, होटल से निकाल दिया।

इन घटनाओं से गान्धी जी के मन पर बहुत बुरा असर पड़ा तथा उन्होंने हाजी जुसब के घर भारतीयों की एक मीटिंग बुलाई, जहाँ गान्धी जी ने लोगों के सामने सब स्थिति रक्खी तथा संगठित होने के लिए कहा।

ट्रांसवाल में भारतीयों के साथ एक और भेदभाव था। रात को नौ बजे के बाद उन्हें घर से बाहर जाने के लिए एक आज्ञा पत्र लेना पड़ता था। इसी प्रकार कोई भी भारतीय फुटपाथ पर नहीं चल सकता था। एक बार एक गोरे ने गान्धी जी को धक्का देकर फुटपाथ से नीचे धकेल दिया था।

सेठ अब्दुल्ला का मुकदमा छः लाख रुपये का था। गान्धी जी को मुकदमे के विषय तैयार करने थे। इससे गान्धी जी की योग्यता भी बढ़ती थी तथा मुकदमा भी नहीं लड़ना था। मुकदमे में सेठ अब्दुल्ला का पक्ष भारी था। मुकदमे में खर्च अधिक होने से दोनों पक्षों के बर्बाद होने की सम्भावना थी। गान्धी जी ने दोनों पक्षों को समझौता करने की सलाह दी। दोनों पक्ष मुकदमे से ऊब चुके थे तथा दोनों सेठ रिश्तेदार भी थे। अतः उनमें समझौता हो गया तथा तैय्यब सेठ ने अब्दुल्ला सेठ को 37000 पौंड देना स्वीकार किया तथा खर्च भी दिया। यह गान्धी जी की पहली सफलता थी।

अब गान्धी जी को भारत लौटना था। इस उपलक्ष्य में सेठ अब्दुल्ला ने भारतीयों को एक पार्टी दी। इस अवसर पर किसी ने गान्धी जी को 'मरकरी' अखबार लाकर दिया, जिसमें समाचार था कि भारतीयों को मताधिकार से वंचित किया जा रहा है। गान्धी जी ने यह समाचार सभी भारतीयों को पढ़कर सुनाया तथा संगठित होकर अन्याय का मुकाबला करने का आह्वान किया तथा नेतृत्व करना भी स्वीकार किया। अब गान्धी जी ने दो महीने अतिरिक्त दक्षिण अफ्रीका में रहने का निश्चय किया। तब एक विरोध पत्र तैयार किया गया था, जिस पर हजारों लोगों के हस्ताक्षर करवाकर असेम्बली से उक्त बिल पास न करने का अनुरोध किया गयां था। किन्तु फिर भी बिल पास हो गया। यह बिल बिलायत से भी स्वीकृत होना था, अतः इस पत्र की बहुत-सी प्रतियां बनाकर इंग्लैण्ड तथा भारत भेजी गई। इस पर कई भारतीय तथा इंग्लैण्ड के अखबारों ने मताधिकार के पक्ष का समर्थन किया, परिणाम स्वरूप यह बिल पास न हो सका। इससे गान्धी जी का सम्मान बहुत बढ़ गया।

दक्षिण अफ्रीका में गिरमिटिये मजदूरों पर बहुत अत्याचार होते थे। एक दिन एक बाला सुन्दर नाम के मजदूर को इतना पीटा गया कि उसके दांत भी टूट गये। वह रोता हुआ गान्धी जी के पास आया। उसके मुंह से खून बह रहा था। गान्धी जी ने उस घटना की रिपोर्ट लिखा, उसके मालिक पर केस दर्ज करवा दिया। जज ने मालिक के लिये सजा का निर्णय दे दिया। तब गान्धी जी उस मालिक से मिल लिये तथा मालिक से बोले कि तुम इस मजदूर को गिरमिटियेपन से मुक्त कर दो, मैं तुम्हें माफ कर दूंगा। इस घटना से गान्धी जी मजदूरों तथा अंग्रेज दोनों के प्यारे बन गये। गान्धी जी को अब दक्षिण अफ्रीका में एक-दो महीने के लिए रोका गया था परन्तु गान्धी जी 20 वर्ष तक दक्षिण अफ्रीका में रहे। इस दौरान उनकी वकालत तथा नेतृत्व दोनों ही चमक उठे। गान्धी जी 1896 में भारत लौटे। (वही पुस्तक, पृ० 59 पर)

गान्धी जी ने भारत में आकर एक हरे कवर की पुस्तिका लिखी, इसे हरी पोथी कहा जाता था। इसकी हजारों प्रतियां छापी गई तथा अखबारों को भी भेजी गई। यह पुस्तक दक्षिण अफ्रीका का भारतीयों से अन्याय-अत्याचार से सम्बन्धित थी। अखबारों में इस विषय पर लेख लिखे गए। यह लेख इंग्लैण्ड तथा दक्षिण अफ्रीका पहुँचे। इससे दक्षिण अफ्रीका के गोरों की बदनामी हुई। इससे गोरे बहुत क्रुद्ध हुए।

कुछ समय बाद गान्धी जी को फिर दक्षिण अफ्रीका बुलाया गया। तब गान्धी जी अपने परिवार तथा सैकड़ों आदमियों के साथ फिर दक्षिण अफ्रीका गये। वहाँ के गोरे गान्धी जी पर इतने क्रुद्ध थे कि उन्होंने गान्धी जी के जहाज को डुबोने तथा वापिस भेजने का प्रयत्न किया। कई दिन के बाद उन्हें जहाज से उतरने की अनुमति मिली। तब गान्धी जी का परिवार गाड़ी से तथा गान्धी जी सेठ रुस्तम के साथ पैदल ही चले। रास्ते में गोरे लड़कों ने गान्धी जी को पहचान लिया तथा वे गान्धी जी पर टूट पड़े। यदि पुलिस कप्तान उन्हें न बचाता तो उनकी मृत्यु ही हो सकती थी।

क्रमशः अगले अंक में......

महान् क्रान्तिकारी चंद्रशेखर आज़ाद

जब कभी भी आपको किसी शक्तिशाली व्यक्तित्व को देखने की इच्छा हो तो आपके दिमाग में सबसे पहले भारत के उग्र स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आज़ाद का नाम अवश्य आयेगा। वे भारत के महान और शक्तिशाली क्रांतिकारी थे, आज़ाद भारत को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाना चाहते थे।

सबसे पहले उन्होंने महात्मा गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया था, बाद में उन्होंने आज़ादी के लिये संघर्ष करने के लिये हथियारों का उपयोग किया। आज़ाद के आश्चर्यचकित कारनामों में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन संस्था शामिल है। उन्होंने अपने सहकर्मी भगतसिंह और सुखदेव के साथ मिलकर अंग्रेजों से लड़ना शुरू किया था और इसके लिये उन्होंने झाँसी कैंप की भी स्थापना की। चंद्रशेखर आजाद मरते दम तक अंग्रेजों के हाथ न आने की कसम खाई थी और मरते दम तक वे अंग्रेजों के हाथ में भी नहीं आये थे, उन्होंने अपने अंतिम समय में अंग्रेजों के हाथ आने के बजाय गर्व से खुद को गोली मार दी थी और भारत की आज़ादी के लिये अपने प्राणों का बलिदान दिया था। आज इस महान क्रांतिकारी के महान जीवन के बारे में कुछ जानते हैं।

''मेरे भारत माता की इस दुर्दशा को देखकर यदि अभी तक आपका रक्त क्रोध नहीं करता है, तो यह आपकी रगों में बहता खून है ही नहीं या फिर बस पानी है।''
—चन्द्रशेखर आज़ाद

पूरा नाम—पंडित चंद्रशेखर तिवारी, जन्म—23 जुलाई 1906, जन्मस्थान—भाभरा (मध्यप्रदेश), पिता—पंडित सीताराम तिवारी, माता—जगरानी देवी।

चन्द्रशेखर आजाद के नाम को साधारणतः चंद्रशेखर या चन्द्रसेखर भी कहते हैं। उनका जीवनकाल 23 जुलाई 1906 से 27 फ़रवरी 1931 के बीच था। ज्यादातर वे आज़ाद के नाम से लोकप्रिय हैं। वे एक भारतीय क्रांतिकारी थे जिन्होंने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के संस्थापक रामप्रसाद बिस्मिल और तीन और मुख्य नेता रोशनसिंह, राजेंद्रनाथ लाहिरी और अशफकुल्ला खान की मृत्यु के बाद नये नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) पुनर्संगठित किया था।

चन्द्रशेखर आजाद का प्रारम्भिक जीवन—आजाद का जन्म चन्द्रशेखर तिवारी के नाम से 23 जुलाई 1906 को भावरा ग्राम में हुआ था, जो वर्तमान में मध्यप्रदेश का अलीराजपुर जिला है। उनके पूर्वज कानपुर (वर्तमान उन्नाव जिला) के पास के बदरका ग्राम से थे। उनके पिता सीताराम तिवारी और माता जगरानी देवी थी।

उनकी माता चाहती थी की उनका बेटा एक महान संस्कृत का विद्वान् बने और उन्होंने चंद्रशेखर के पिता से उन्हें अभ्यास के लिये बनारस के काशी विद्यापीठ भेजने के लिये भी कहा था। दिसम्बर 1921 में जब मोहनदास करमचंद गांधी ने असहकार आन्दोलन की घोषणा की थी तब चंद्रशेखर आज़ाद 15 साल के एक विद्यार्थी थे। लेकिन फिर भी वे गांधी जी के असहकार आन्दोलन में शामिल हो गए। परिणाम स्वरूप उन्हें कैद कर लिया गया।

जब चंद्रशेखर को जज के सामने लाया गया तो नाम पूछने पर चंद्रशेखर ने अपना नाम 'आज़ाद' बताया था, उनके पिता का नाम 'स्वतंत्र' और उनका निवास स्थान 'जेल' बताया। उसी दिन से चंद्रशेखर लोगों के बीच चन्द्रशेखर आज़ाद के नाम से लोकप्रिय हुए।

चन्द्रशेखर आजाद क्रांतिकारी जीवन—1922 में जब गांधी जी ने चंद्रशेखर को असहकार आन्दोलन से निकाल दिया था तब आज़ाद और क्रोधित हो गए थे। तब उनकी मुलाकात युवा क्रांतिकारी प्रन्वेश चटर्जी से हुई जिन्होंने उनकी मुलाकात रामप्रसाद बिस्मिल से करवाई, जिन्होंने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) की स्थापना की थी, यह एक क्रांतिकारी संस्था थी।

जब आजाद ने एक कंदील पर अपना हाथ रखा और तब तक नहीं हटाया जब तक की उनकी त्वचा जल ना जाये तब आजाद को देखकर बिस्मिल काफी प्रभावित हुए। इसके बाद चंद्रशेखर आजाद हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन के सक्रिय सदस्य बन गए थे और लगातार अपने एसोसिएशन के लिये चंदा इकठ्ठा करने में जुट गए।

उन्होंने ज्यादातर चंदा सरकारी तिजोरियों को लूटकर ही जमा किया था। वे एक नये भारत का निर्माण करना चाहते थे जो सामाजिक तत्त्वों पर आधारित हो।

आजाद 1925 के काकोरी ट्रेन लूट में भी शामिल थे और अंतिम समय में उन्होंने लाला लाजपतराय के कातिल जे.पी. सौन्डेर्स की हत्या 1928 में की थी। कांग्रेस पार्टी के सदस्य बने रहते हुए भी मोतीलाल नेहरू आज़ाद को सहायता के लिये पैसे दिया करते थे।

झाँसी में किये गए कार्य–आजाद ने कुछ समय के लिये झाँसी को अपनी संस्था का केंद्र बनाया था। इसके लिये वे ओरछा के जंगलों का उपयोग करते थे, जो झाँसी से तक़रीबन 15 किलोमीटर दूर था, वही पर वे निशानेबाजी का अभ्यास करते और शातिर निशानेबाज बनने की कोशिश करते रहते, इसके साथ ही अपने समूह के दूसरे सदस्यों को भी प्रशिक्षण दे रखा था। जंगल के नजदीक ही उन्होंने सतर नदी के किनारे पर हनुमान मंदिर बनवाया था।

लंबे समय तक वे पंडित हरिशंकर ब्रह्मचारी के नाम से वही रह रहे थे और पास ही ग्राम धिमारपुरा के बच्चों को पढ़ाते थे। इस प्रकार उन्होंने स्थानिक लोगों के साथ अच्छी-खासी पहचान बना ली थी। बाद में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा धिमारपुरा ग्राम का नाम बदलकर आजादपुरा रखा गया था। झाँसी में रहते समय उन्होंने सदर बाज़ार में बुंदेलखंड मोटर गेराज से कार चलाना भी सिख लिया था। उस समय सदाशिवराव मलकापुरकर, विश्वनाथ वैशम्पायन और भगवान दास माहौर उनके नजदीकी थे और आजाद के क्रांतिकारी समूह का भी हिस्सा बन चुके थे।

इसके बाद कांग्रेस नेता रघुनाथ विनायक धुलेकर और सीताराम भास्कर भागवत भी आजाद के नजदीकी बने। आजाद कुछ समय तक रुद्रनारायण सिंह के घर नई बस्ती में भी रुके थे और नगर में भागवत के घर पर भी रुके थे।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन–हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन ((HSRA) की स्थापना रामप्रसाद बिस्मिल, चटर्जी, सचिन्द्र नाथ सान्याल और सचिन्द्र नाथ बक्षी ने मिलकर 1924 में की थी। 1925 में काकोरी ट्रेन लूट के बाद ब्रिटिश भारतीयों की क्रांतिकारी गतिविधियों से डर चुके थे। प्रसाद, अशफाकुल्ला खान, ठाकुर रोशनसिंह और राजेंद्रनाथ लाहिरी को काकोरी कांड में दोषी पाये जाने के कारण मौत की सजा दी गयी थी। लेकिन आजाद, केशव चक्रवर्ति और मुरारी शर्मा को भी दोषी पाया गया था। बाद में कुछ समय बाद चन्द्रशेखर आजाद ने अपने क्रांतिकारियों जैसे शेओ वर्मा और महावीरसिंह की सहायता से हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन को पुनर्संगठित किया। इसके साथ ही आजाद भगवती चरण वोहरा, भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु के साथ भी जुड़े हुए थे, इन्होंने आजाद को हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन रखने में सहायता भी की थी।

चंद्रशेखर आजाद मृत्यु–आजाद की मृत्यु इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में 27 फरवरी 1931 को हुई थी। जानकारों से जानकारी मिलने के बाद ब्रिटिश पुलिस ने आजाद और उनके सहकर्मियों की चारों तरफ से घेर लिया था। खुद का बचाव करते हुए वे काफी घायल हो गए थे और उन्होंने कई पुलिसकर्मियों को मारा भी था।

चंद्रशेखर बड़ी बहादुरी से ब्रिटिश सेना का सामना कर रहे थे और इसी वजह से सुखदेवराज भी वहा से भागने में सफल हुए। लंबे समय तक चलने वाली गोलीबारी के बाद, अंततः आजाद चाहते थे कि वे ब्रिटिशों के हाथ ना लगे और जब पिस्तौल में आखिरी गोली बची हुई थी तब उन्होंने वह आखिरी गोली खुद को ही मार दी थी। चंद्रशेखर आजाद की वह पिस्तौल हमें आज भी इलाहाबाद म्यूजियम में देखने मिलती है। लोगों को जानकारी दिये बिना ही उनके शव को रसूलाबाद घाट पर अंतिम संस्कार के लिये भेजा गया था। लेकिन जैसे-जैसे लोगों को इस बात की जानकारी मिलते गयी वैसे ही लोगों ने पार्क को चारों तरफ से घेर लिया था। उस समय ब्रिटिश शासक के खिलाफ लोग नारे लगा रहे थे और आज़ाद की तारीफ कर रहे थे।

आवश्यक सूचना

ग्राम माहरा जिला सोनीपत में दिनांक 12 अगस्त, 2018 को प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक भगत फूलसिंह का 77वां बलिदान दिवस मनाया जा रहा है। इस कार्यक्रम में अनेक विद्वान्, भजनोपदेशक एवं राजनेता पधार रहे हैं। अतः आप सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि कार्यक्रम में पहुँचने का कष्ट करें।

-सभामन्त्री

जीवन का प्रथम प्रश्न

❑ इन्द्रजित्‌देव, 9466123677

मनुष्य के जीवन में अनेक प्रश्न समुपस्थित होते हैं। कुछ अपने हैं तो कुछ बेगाने हैं। कुछ तन के होते हैं तो कुछ मन के भी होते हैं। कुछ भौतिक प्रश्न हैं तो कुछ

आध्यात्मिक हैं। तात्पर्य यह है कि प्रश्न-दर-प्रश्न हैं। हम एक प्रश्न हल कर भी लेते हैं तो दूसरे प्रश्न उत्तर मांगते हैं। एक लम्बा प्रयास करते-करते जीवन व्यतीत हो जाता है। प्रश्नों का बोझ कम नहीं होता। ऋषियों ने मनुष्य के समक्ष जो प्रश्न रखा है, उसे समझना अनिवार्य है। वह प्रश्न यह है कि मनुष्य प्रथम यह समझ ले कि वह कौन है? किसका है? उसका दर्जा क्या है? उसके जन्म का उद्देश्य क्या है व उसका सहायक कौन है?

मनुष्य शिशु के रूप में जन्मता है। जन्म लेते ही उसका जातकर्म संस्कार किया जाता है जिसमें पिता शिशु के कान में कहता है-वेदोसि अर्थात् ज्ञानवाला प्राणी है, अज्ञानी नहीं बनना। शिशु की जिह्वा पर सुवर्ण की शलाका से घृत व मधु चटाना तथा जिह्वा पर **'ओ३म्'** लिखने का कार्य पिता करता है। अर्थात् हे पुत्र/पुत्री! तुम्हें मुख्य रूप से आध्यात्मिक जीवन अपनाना, आत्मा की उन्नति, दृढ़ता तथा सुसंस्कारिता के लिए ही प्रयत्नशील रहना है। इसमें बाधाओं को हटाना। यह तभी होगा, जब ईश्वर के दिए ज्ञान अर्थात् वेदानुसार जीवन व्यतीत करेगा। यह उद्देश्य तभी पूर्ण होगा जब उसे बोध कराया जाए कि वह कौन है, किसका है, आदि। इसीलिए आशीर्वाद के रूप में पिता कहता है-

कोऽसि कतमोऽस्येषोऽस्यमृतोऽसि।

अर्थात् तू कौन है? तू कौन-सा है? इसमें पिता ही कहता है-तू अमृत है। तात्पर्य है कि तू शरीर नहीं है। यह शरीर तुझे ईश ने दिया। वस्तुतः तुम आत्मा हो, जिसकी मृत्यु कभी नहीं होगी। इसी के विकास हेतु तुम जीवनभर प्रयत्नशील रहना। पिता के द्वारा प्रथम ज्ञान समझा देने के विपरीत व्यक्ति स्वयं को भूलकर या गहराई से स्वयं को न समझकर पदार्थों, वस्तुओं अथवा विषयों की तरफ ही दौड़ता है-

ज़िन्दगी भर तो हुई गुफ्तगू औरों से मगर-
आज तक हमारी हमसे ही मुलाकात न हुई।

अन्यान्य विषयों में मस्त-व्यस्त मनुष्य बहुत कुछ जान लेता है, परन्तु स्वयं को जानने का प्रयत्न तो दूर की बात है, इच्छा भी नहीं करता।

आकाश में ऊँची से ऊँची जिसकी उड़ान है।
सागर तल में नीचे तक जिसकी पहचान है।
ज्ञान हो कि विज्ञान बहुत जान लिया जिसने,
हाय! मगर वह आदमी खुद से अनजान है॥

एक बार उपदेश प्राप्त करने के लिए महर्षि सनत के पास मुनि नारद गए तो निवेदन किया-"भगवन्! मुझे कुछ ज्ञान दीजिएगा।" महर्षि ने पात्रता जानने के उद्देश्य से पूछा-"अब तक तुम क्या-क्या जान चुके हो, प्रथम मुझे यह बताओ ताकि मैं आगे की बात बताऊँ।"

नारद मुनि ने कुछ ग्रन्थों के नाम बताए-चारों वेद, इतिहास, पुराण, व्याकरण, गणित, खगोल, तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, क्षत्रविद्या, भूतविद्या, ब्रह्मविद्या, वेदांग, नक्षत्रविद्या, शिल्पविद्या, ज्योतिष, वाद्य, नृत्य, गान, धनुर्वेद, उत्पात ज्ञान, निरुक्त आदि।

"इतने अधिक ग्रन्थ पढ़ चुकने के पश्चात् मेरे पास क्यों आए हो?" "भगवन्! **अहं शोचामि**। मैं शोकग्रस्त हूँ, क्योंकि मैं मन्त्रवित् तो हो गया हूँ, परन्तु आत्मवित् नहीं हुआ। मैंने बहुत-सी बातें अन्यान्य विषयों में तो जान लीहैं, परन्तु मैं क्या हूँ, कौन हूँ, इससे तो अभी तक मैं सर्वथा अनभिज्ञ ही हूँ। मैंने सुना है-**आत्मवित् तरति शोकम्।** बिना स्वयं के जाने कोई मनुष्य शोक से मुक्त नहीं हो सकता। अतः मुझे आत्मज्ञान कराइएगा।" (छान्दोग्योपनिषद्)

महर्षि सनत कुमार ने विस्तृत ज्ञान नारद को दिया। संक्षेप में-जो जीव आत्मज्ञानी व सर्वसिद्धयुक्त हो जाता है, वह आत्मदर्शी न तो मृत्यु से डरता है, न दुःखी होता है। वह सब यथार्थ व वास्तविक ही देखता है। सर्वत्र आत्मतत्त्व ही देखते हुए वह शोकग्रस्त नहीं होता। कहा भी है-'**आत्मवित् न शोचति।**' यजुर्वेद में कहा भी है-'**तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः**' अर्थात् इस एक आत्मा का साक्षात्कार कर लेने पर न तो मनुष्य को मोह होता है तथा न किसी भी प्रकार का शोक होता है। शोक तब तक रहता है, जब तक अविद्या से ग्रस्त व वशीभूत होकर मनुष्य सोचता है।

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्योमैत्रेय्यात्मनो व अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेन सर्वमिदं विदितम्। (बृहदारण्यकोपनिषद् 2.4.5)

अर्थात् आत्मा ही तो देखने योग्य है, जानने योग्य है, सुनने योग्य है, मनन करने योग्य है। निदिध्यासन अर्थात् निरन्तर ध्यान करने योग्य है। इसी आत्मा के ही दर्शन से, श्रवण से, मनन से और निरन्तर ध्यान-समाधि द्वारा साक्षात् अनुभव करने से ही यह सब कुछ विदित हो जाता है।

आत्मा की सिद्धि के लिए यह जानना आवश्यक है कि शरीर में आत्मा के लक्षण (=लिंग) कितने हैं। न्यायदर्शनानुसार लक्षण ये छः हैं-'**इच्छाद्वेषप्रयत्न-सुखदुःखज्ञानात्मनो लिङ्गमिति**' अर्थात् इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दुःख, तथा ज्ञान। इनसे आत्मा के अस्तित्व का बोध होता है। जहाँ ये लक्षण नहीं होते, वहाँ आत्मा नहीं है। सुख देने वाले पदार्थ या व्यक्ति को प्राप्त करने की इच्छा तथा दुःख देने वाले पदार्थ अथवा व्यक्ति से दूर रहने या न प्राप्त होने की भावना को द्वेष कहते हैं तथा प्राप्त करने या दूर रहने के लिए जो प्रयास किया जाता है, उसे प्रयत्न कहते हैं। मन के अनुकूल प्राप्त फल व परिणाम को सुख तथा प्रतिकूल या रुकावट अथवा बाधा दुःख कहा जाता है। अनुकूलता तथा प्रतिकूलता की भिन्नता को समझना ज्ञान कहाता है। आत्मा जब शरीर में रहता है, तब ये छः गुण शरीर में दिखाई देते हैं। आत्मा के न रहने पर शरीर में इच्छा, द्वेष तथा प्रयत्नादि गुण, लक्षण दिखाई नहीं देते हैं।

आत्मा न पुरुष है, न स्त्री है तथा न ही नपुंसक है। जिस देह में प्रवेश करता है, तदरूप हो जाता है, कहा जाता है। जैसे एक ही अग्नि पदार्थ किसी पदार्थ में प्रविष्ट होकर तदरूप हो जाता है, वैसे ही जिस शरीर में प्रवेश करता है, उसके रूप एवं आकृति को धारण कर लेता है। आत्मा को न भूख लगती है, न ही प्यास सताती है। ये पार्थिव शरीर के गुण हैं। शरीर से सम्बद्ध होने पर ही आत्मा नेत्रों के माध्यम से देखता है, कानों के माध्यम से सुनता है, जिह्वा के माध्यम से आवृत हुआ आत्मा ही चखता है। आंख, कान व जिह्वा आदि इन्द्रियां तो आत्मा के साधन हैं, परन्तु इसके विपरीत यह भी सत्य है कि अशरीरी अवस्था में आत्मा को न दुःख होता है न ही सुख अनुभव होता है। न कोई इच्छा सताती है तथा न किसी प्रकार का द्वेष होता है, न ये आत्मा को स्पर्श करते हैं-'**...अशरीरं वाचं सन्ति न प्रियाप्रिये स्पृशतः**' (छान्दोग्योपनिषद् 8.12.1)।

आत्मा का महत्त्व यह भी है कि यही तो (ज्ञान चक्षुओं से) देखने योग्य है, जानने योग्य है, सुनने योग्य है, मनन करने योग्य है, निदिध्यासन अर्थात् निरन्तर ध्यान करने योग्य है। इसके दर्शन करने अर्थात् जानने, अनुभव करने से, श्रवण करने से, मनन करने से, निरन्तर ध्यान-समाधि द्वारा साक्षात् अनुभव करने से ही सब कुछ विदित हो जाता हे। इसी के परिणाम स्वरूप सब प्रकार के रहस्य खुल जाते हैं-

याज्ञवल्क्य ऋषि यहाँ जो 'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः...' आदि कह रहे हैं, इसलिए कह रहे हैं कि जो यह पिण्ड में विद्यमान आत्मा तृप्ति सुख वा आनन्द की प्राप्ति के लिए निकला है, वह पहले अपने-आपको पहचाने, अपने वास्तविक उद्देश्य तथा साधनों को समझे। फिर वह इस आत्मा के भी आत्मा को अर्थात् सर्वव्यापक एवं अन्तर्यामी सर्वज्ञ ब्रह्माण्ड के आत्मा अर्थात् परमात्मा की ओर अग्रसर हो, तभी वास्तविक सुख, वास्तविक आनन्द तथा वास्तविक तृप्ति मिलेगी। बिना आत्मज्ञान के संसार भटक रहा है।

बिन आत्मज्ञान के दुनियां में इन्सान भटकते देखे हैं।
आम बसर की बात ही क्या सुलतान भटकते देखे हैं॥
जो चैन व शान्ति की दौलत है, मिलती है आत्मज्ञानी को।
धनहीन ने तो भटकना है, धनवान भटकते देखे हैं॥
सब ज्ञान तो उसने पा ही लिया पर आत्मज्ञान ही पाया न।
यही कारण है कि पण्डित भी अनजान भटकते देखे हैं॥
जो भटकाते हैं दुनिया को, वे आप हीभटकते देखे हैं।
गुणवान भटकते देखे हैं, इन्सान भटकते देखे हैं॥
जो आत्मज्ञानी होता है, बलवान है सारी दुनिया में।
बिन इसके 'पथिक' इस दुनिया में बलवान भटकते देखे हैं॥

बालक के नामकरण-संस्कार के अवसर पर पिता पुत्र के नासिका द्वार से बाहर निकलते हुए वायु का स्पर्श करके फिर कहता है-

कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को नामासि।
यस्य ते नामामन्महि यं त्वा सोमेनातीतृपाम्॥

अर्थात् आज हमने तेरा नामकरण किया है, जिस तुझको दूध से तृप्त किया है? वह तू कौन है? कौन-सा है? किसका है? क्या नाम है तेरा?

क्रमशः अगले अंक में......

ईश्वर की उपासना का महत्त्व

एक तरफ भोले-भाले सीधे-सादे व्यक्ति हैं जो अपने को धार्मिक कहते हैं, उनका शोषण चालाक लोग कर रहे हैं- धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, भगवान् के नाम पर, तुम्हारे

पापों को भगवान् क्षमा कर देगा। भगवान् के दर्शन से, पूजापाठ कर्मकाण्ड से स्वर्ग मिलेगा। हम तुम्हें मुक्ति दिला देंगे। नाम जपमात्र तथा कथा सुनने मात्र से ही मुक्ति हो जायेगी। इस प्रकार सम्पूर्ण मानव जाति ठगी जा रही है, क्योंकि हम विचारवान नहीं हैं, सत्य-झूठ की परीक्षा नहीं करते। एक कथा से यह समझ जायेंगे, ऊपर लिखी यह बात स्पष्ट हो जायेगी।

एक यात्री पैदल यात्रा कर रहा था। वह भोला-भाला, सीधा-सादा था। रास्ते में एक पिंजरे में चालाक शेर बन्द था उसने यात्री को बुलाया और कहा भाई मैंने कोई अपराध नहीं किया मुझे खा-म-खा पिंजरे में बन्द कर दिया है। मैं भूख से मर रहा हूँ आप पिंजरे का दरवाजा खोल दो, मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा। आपका उपकार कभी नहीं भूलूँगा।

यात्री ने विश्वास करके दरवाजा खोल दिया। जैसे ही वह दरवाजे के बाहर आया तो उसने यात्री को पकड़ लिया। यात्री ने कहा यह क्या कर रहे हो। शेर ने कहा, मैं बहुत भूखा हूँ चला नहीं जाता इस कारण पहले तुम्हें खाऊँगा फिर चला जाऊँगा। यात्री घबरा गया उसने कहा यह तो अन्याय है। शेर ने कहा किसी से न्याय करा लो। इतने में कोई बुद्धिमान् व्यक्ति उधर से जा रहा था, उसको यात्री ने बुलाया और कहा भाई हमारा न्याय कर दो। तब दोनों से उनकी बातें सुनी। यात्री ने कहा कि शेर ने कहा था कि मैं भूखा हूँ। पिंजरे का दरवाजा खोल दो, मैं तुम्हारा उपकार मानूँगा, परन्तु यह तो मुझे ही मार रहा है। यह अन्याय है। तब शेर ने कहा कि भाई यह ठीक कहता है, परन्तु मैं बहुत भूखा हूँ, चला नहीं जाता, इस कारण से खाऊँगा तभी तो जाऊँगा।

उस व्यक्ति ने कहा कि तुम्हारी बात तो ठीक है परन्तु पहले क्या स्थिति थी उसे देख लूँ, तब ठीक-ठीक बताऊँगा। तब शेर पिंजरे में गया व यात्री ने दरवाजा बन्द किया और कहा कि यह स्थिति पहले थी। तब बुद्धिमान् व्यक्ति ने कहा, यात्री को अब तुम जाओ। मनुष्य विचार करके देखे कि क्या ठीक है क्या नहीं, क्या सांसारिक भोगों और वस्तुओं में सदा सुखी हो जाओगे, तो देखोगे कि सुख के भोगों से तृष्णा बढ़ती है घटती नहीं है, जिस सुख के लिए विषयों को भोगा, वह तो ठहरा ही नहीं, इसके विरुद्ध वह जितना भी भोगता है, उतनी तृष्णा बढ़ती जाती है।

मनुष्य एक छाया की तरह है, जितना चलेगा उतनी छाया उसके साथ चलेगी, रुकेगा तो छाया रुकेगी। ठीक इसी प्रकार मन और इन्द्रियों को रोकोगे तो रुकेगी और मन-इन्द्रियों की चाहत पूरी करोगे तो आपको नचाएगी। यह शरीर एक रथ है, इन्द्रियां घोड़े हैं, मन सारथी है, आत्मा इस रथ का राजा है, जो राजा की सुनेगा तो सब ठीक चलेगा। धुरे-पहिये-घोड़े-सारथी को बिगड़ने नहीं देगा। अगर राजा बलवान होगा तो आत्मा बलवान बनेगी, आत्मा उपासना से बलवान बनती है।

-कृष्णा देवी आर्या, प्रधान आर्य महिला मण्डल, गांव बालन्द, जिला रोहतक

योग-ध्यान-साधना शिविर

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू काश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्य स्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायति जी के सान्निध्य में दिनांक 16 से 23 सितम्बर-2018 तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाएगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषदादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में स्वामी वेदपति जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य चैतन्य स्वामी जी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं, इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है; अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं0 09419107788, 09419796949 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान।

ये वहीं बैठे हैं, इन्हें आगे बढ़ाओ

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

ऋषि जी से कभी किसी ने '**सर्वधर्मान्परित्यज्य**' को लेकर शंका की। आर्ष विद्या के महाधनी ऋषि जी ने '**सभी अधर्म के कार्यों को छोड़ना चाहिए**', यह सही

व्याख्या करके उसकी शंका का समाधान किया। ऋषि जी ने ऐसी कितनी ही शंकाओं के समाधान करके अर्थों के अनर्थ रोक कर समाज को सत्य धर्म में प्रवृत्त करने के लिए अपने प्राण आहूत कर दिए। ऋषि ने लाखों लोगों के अविद्या के बन्धन तोड़कर ऋषि ऋण को चुकता किया। हम ऋषि के भक्त कहलाते हैं, ऋषि के जीवनवृत्त को सुनकर, पढ़कर सात्त्विक रसास्वादन लेते हैं, उनकी वेदोक्त शिक्षाओं से मार्गदर्शन पाते हैं, तो क्या हमें ऋषि ऋण को चुकाने का प्रयास नहीं करना चाहिए? तो आओ, उन लोगों को जगाएँ जो अज्ञान में सोये पढ़े हैं, उन लोगों को बचाएँ जो अविद्या के बन्धन में जकड़े पड़े हैं। ऋषि का ज्ञान जहाँ नहीं पहुँचा, वहाँ लोग उसी असत्य अन्धकार में बैठे हैं, जहाँ से उठाकर ऋषि उन्हें सत्य की प्रकाश की ओर बढ़ाना चाहते थे।

पिछले दिनों 26-27-28 जून को हमने रोहतक के आसपास के 17 गाँव में वैदिक धर्म सन्देश प्रचार यात्रा निकाली। सिंहपुरा गाँव की रेलवे फाटक के पास एक रामपालदास का भ्रमित किया व्यक्ति मिला। स्वयं भी कैंसर को झाड़-फूंक द्वारा दूर करने का दावा कर रहा था। ठीक ही कहा है कि '**समान गुण वालों में परस्पर मित्रता पाई जाती है।**' उसने कहा कि स्वामी दयानन्द ने '**अनुत्तम का अर्थ अति उत्तम किया है।**' हमने कहा कि जहाँ अति उत्तम अर्थ है, वहीं किया होगा। और कहाँ किया है? हमने पूछा, अभी दिखाओ, साथ चलते हैं। उसने कहाँ चलना था, कहाँ दिखाना था। जैसा बताया गया था वही बोल रहा था। योगदर्शन में आया, '**संतोषादनुत्तमसुखलाभः**' सूत्र भी पढ़ा होता तो भी इस प्रकार का भ्रम न होता। व्याकरण के नञ् तत्पुरुष और बहुव्रीहि समाज के ज्ञान की बात तो दूर, यदि प्रकरण को भी समझ लें तो भी अर्थ के अनर्थ होने से बच जायें। संतोष से अनुत्तम सुख की प्राप्ति होती है। अब यहाँ '**अनुत्तम**' जिसे पढ़ते हो उसका अर्थ **अति उत्तम** करोगे या कुछ और? बहुव्रीहि समासादि व्याकरण के नियमों को यदि अर्थ पर नहीं घटा सकते, तो प्रकरण के अनुसार सही अर्थों को तो समझ लो। इसीलिए तो शास्त्रों में ऋषि-मुनियों के ग्रन्थों पर बिना सोचे-समझे आक्षेप करने वालों तथा वेदों की निन्दा करने वालों को ब्रह्महत्यारा कहा है। इनके लिए कठोर दण्ड का भी विधान है। ये सर्वत्र अव्यवस्थाएँ फैलाते हैं। वैदिक राजा के अभाव में इन्हें रोकने का एक ही उपाय है कि बार-बार इनकी अविद्या पर प्रहार किया जाए। यह कहना तो कदापि ठीक नहीं होगा कि इनका विषय ही नहीं उठाना चाहिए, आदि। ये बड़े शातिराना ढंग से अविद्या फैलाते हैं। ऐसे में इन्हें अनदेखा करके हम कैसे ऋषि भक्त हो सकते हैं? सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में वर्णित विद्या में कोरे '**खाखी**' की तरह अनेक लोग ढोंगी गुरुओं के भरमाए बैठे हैं, भरमाए जा रहे हैं। इन्हें उठाओ, आगे बढ़ाओ।

प्रेरक वचन

- **व्यक्ति अपने कार्यों से महान् होता है, अपने जन्म से नहीं।**
- **जरूरी नहीं कि हर बढ़िया चीज आपके लिए ही बेहतर साबित हो सके।**
- **डूबने के डर से तैरना नहीं सीखा जा सकता।**
- **एक सफलता के साथ जीवन समाप्त नहीं हो जाता है।**
- **धैर्य रखने पर अवसर अवश्य दस्तक देता है।**
- **शरीर रूपी मन्दिर की आराधना के लिए योग अच्छा माध्यम है।**
- **पूर्ण मनोयोग से किया गया प्रयास अवश्य फलितार्थ होता है।**
- **प्रिय वचन बोलने वाला सबका प्रिय होता है।**
- **समय के साथ कई प्रश्नों का उत्तर स्वयं मिल जाता है।**
- **केवल वही नाकाम होते हैं, जो कामयाबी के लिए कोशिश नहीं करते।**

-भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक)

हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ विद्यार्थी अवार्ड दिवस

15 जुलाई, 2018। 'महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान' के के.एल. महता दयानन्द विद्यालयों ने अपने संस्थापक अध्यक्ष महात्मा कन्हैयालाल महता का जन्मदिवस **'विद्यार्थी अवार्ड दिवस'** के रूप अत्यन्त हर्षोल्लास से मनाया। इस महाविद्यालय के सभागार में आयोजित समारोह में विद्यार्थियों ने महान् शिक्षाविद् महात्मा कन्हैयालाल जी महता जी के प्रति गीत प्रस्तुत किए। विभिन्न विद्यालयों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों ने श्रोताओं का दिल जीत लिया। डॉ० ओ३म्प्रकाश जी ने महता जी को 'आर्यसमाज का दीवाना' कहा। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती त्रिखा, विधायक फरीरदाबाद ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'यह संस्थान उनके लिए मन्दिर की तरह है।' श्री ए.सी. चौधरी ने अपने भावों में महात्मा कन्हैयालाल महता को 'चिरंतन साधु' और 'युगपुरुष' की संज्ञा दी। इनका स्वागत संस्थान की अध्यक्षा डॉ. विमल महता ने तथा संस्थान की प्रबन्धक समिति के वरिष्ठ सदस्यों ने किया। मुख्य अतिथि ने सी.बी.एस.ई. एवं हरियाणा बोर्ड की दसवीं के उन विद्यार्थियों को सम्मानित किया जिन्होंने इस संस्थान के अन्तर्विद्यालयों में सर्वोच्च अंक प्राप्त किया। इस वर्ष सी.बी.एस.ई. की दसवीं परीक्षा का स्वर्णपदक के.एल. महता दयानन्द पब्लिक सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल नेहरू ग्राउण्ड के विद्यार्थी सुश्री ईशा नागपाल को मिला तथा हरियाणा बोर्ड में के.एल. महता दयानन्द स्कूल, 5ई/55 के विद्यार्थी सुश्री संजना को मिला। अपने-अपने विद्यालयों में सर्वोच्च अंक पाने वाले विद्यार्थी को दो वर्ष की निःशुल्क ट्यूशन फीस का सर्टिफिकेट दिया गया। उपाध्यक्षा श्री आनन्द महता ने अतिथियों का आभार प्रकट किया।

ओ३म् का जप

आवागमन खत्म होवे तूं जप ईश्वर की माला।
निष्काम काम कर दुनिया में हो जन्म-मरण का टाला॥टेक॥
छोड़ स्वार्थ कर पुरुषार्थ हो ब्रह्मलोक में वास तेरा।
दुःख कटज्या और सुख मिलज्या हो ईश्वर में विश्वास तेरा।
ओ३म् नाम बिन एक भी खाली ना जाना चाहिए सांस तेरा।
सत् विद्या तप ज्ञान से हो ज्या बुद्धि का विकास तेरा।
सत्याचरण और सत्संग से लगे चंचल मन के ताला॥ 1॥
मुक्ति के साधन चार बताये करते वेद इशारे।
विवेक से इन्द्रिय ज्ञान कला को जाणे न्यारे-न्यारे।
वैराग्य होण से प्रकृति के भोग लगें सब खारे।
षट्क सम्पत्ति मुमुक्षत्व से पहुँचे ओ३म् के द्वारे।
काम क्रोध लोभ लालच का झूठा है मोह जाला॥ 2॥
मुक्ति में जो जीव रहे वह आनन्द मौज उड़ावै।
परान्त काल तक मुक्ति में रह प्रभु के दर्शन पावै।
इकतीस नील दस खरब चालीस अरब वर्ष बतावै।
फिर मुक्त जीव प्रकृति के सब भोग भोगना चाहवै।
भूमण्डल का राज मिले जो मुक्ति से लौटण आला॥ 3॥
कर्मों के अनुसार जीव जैसी करते वैसी भरते हैं।
कर्म वासना में लिप्त रहे वही जीव जन्मते-मरते हैं।
वो ऊँची पदवी पाते हैं जो नित्य भगवान सुमरते हैं।
भोग त्याग के ईश्वर की तन मन से भक्ति करते हैं।
रामेश्वर नित ओ३म् रटै तै मिलता लोक निराला॥ 4॥

—पं० रामेश्वर आर्य, पूर्व सभा भजनोपदेशक

पीयेगा कोई किस्मत...

पीयेगा कोई किस्मत वाला,
वेदों का ये ज्ञान निराला रे।
ओ३म् नाम की चाबी से ही,
खुलता बंद अकल का ताला रे॥
रूप दिया है सबको उसने, वो सृष्टि का निर्माता है।
सबके संग में रहता दाता, सबका साथ निभाता है।
बिना बताये देता सबको, करता न्याय निराला रे॥
यश देता है जिसको दाता, उसका रोशन नाम करे।
बल-बुद्धि यश देता उसको, जो कोई सूचा काम करे।
नाम उसी का होगा जग में, जिसका निराला रे।
मानव के हर पुर्जे अन्दर, देखो नया कमाल है।
ईश्वर का जो शुक्र करे ना, इसीलिए बेहाल है।
सुखी रहेगा वो परिवार, जिसका प्यार निराला रे॥
प्यार-प्रेम से रहने वाला, हर घर स्वर्ग बनाता है।
दुःख देकर जो पाप कमाये, वह पापी कहलाता है।
आर्य सुख वहीं पर आएगा, जो बना धर्म रखवाला रे॥

—रामकुमार आर्य, अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल, हिसार

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज सैक्टर-4 फरीदाबाद	18 से 19 अगस्त 2018
2.	आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाड़ी	2 से 3 सित० 2018
3.	आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर (रेवाड़ी)	22 से 23 सित० 2018
4.	आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक	13 से 14 अक्तू० 2018
5.	आर्यसमाज रेवाड़ी	13 से 14 अक्तू० 2018
6.	आर्यसमाज नंगली नारनौल (महेन्द्रगढ़)	28 से 29 नव० 2018

—रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

पानीपत में करौंथा सत्याग्रह शहीदी दिवस के अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए सभा प्रस्तोता आचार्य सर्वमित्र आर्य।

पानीपत में करौंथा सत्याग्रह शहीदी दिवस के अवसर पर उपस्थित आर्यजन।

पानीपत में करौंथा सत्याग्रह शहीदी दिवस के अवसर पर सभामंत्री श्री उमेद सिंह शर्मा को सम्मानित करते हुए पदाधिकारीगण।

पानीपत में करौंथा सत्याग्रह शहीदी दिवस के अवसर पर सूबेदार करतार सिंह को सम्मानित करते हुए पदाधिकारीगण।

सीनियर सै. स्कूल शांदलकलां सोनीपत में आयोजित वेद प्रचार कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए सभा प्रस्तोता आचार्य सर्वमित्र आर्य।

सीनियर सै. स्कूल शांदलकलां सोनीपत में आयोजित वेद प्रचार कार्यक्रम में यज्ञ करते हुए स्कूल अध्यापक, छात्र-छात्राएं व आर्यजन।

सीनियर सै. स्कूल शांदलकलां सोनीपत में आयोजित वेद प्रचार कार्यक्रम में उपस्थित आर्यजन, स्कूल स्टाफ व छात्र-छात्राएं।

सीनियर सै. स्कूल शांदलकलां सोनीपत में आयोजित वेद प्रचार कार्यक्रम के उपरान्त पत्रकार वार्ता करते हुए जिला शिक्षा अधिकारी श्री विलेसिंह, आचार्य सर्वमित्र आर्य, श्री रमेश आर्य।

ओ३म्

यज्ञ-योग और स्वाध्याय जीवन में अपनाएं - आर्यसमाज के साथ कदम से कदम बढ़ाएं

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25 से 28 अक्टूबर 2018
दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

दिल्ली (भारत)

25 से 28 अक्टूबर
2018

तदनुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ विक्रमी संवत् २०७५

-: सम्मेलन स्थल :-

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85

यज्ञ, योग, वैदिक सत्संग और प्रवचनों से लाभ उठाने हेतु

भारी सख्या मे परिवार सहित सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 91-9540029044

E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org

YouTube thearyasamaj 9540045898

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

श्री ....

पता ....

....

"आर्य प्रतिनिधि" लौटाने का पता :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा